विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम एवं छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल का अंतर्संबंध : प्रशिक्षणार्थियों के संदर्भ में एक अध्ययन .एड.एल.डी

1. **डेकेश्वर प्रसाद वर्मा, शोधार्थी, शिक्षा, श्री रावतपुरा सरकार, विश्वविद्यालय, रायपुर, छ.ग.**
2. **प्रो (डॉ). अभिषेक श्रीवास्तव, डीन, शिक्षा, श्री रावतपुरा सरकार, विश्वविद्यालय, रायपुर, छ.ग.**

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम एवं छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल के मध्य विद्यमान अंतर्संबंध का अध्ययन करना है। अध्ययन हेतु डी प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त .एड.एल.100 उत्तरों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात हुआ कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम एवं शिक्षण कौशल विकास के विभिन्न आयामों जैसे पाठ योजना निर्माण, कक्षा प्रबंधन, शिक्षण सामग्री चयन, मूल्यांकन क्षमता, संप्रेषण कौशल तथा आत्मविश्वास के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान है। अधिकांश प्रशिक्षणार्थियों ने इंटर्नशिप अनुभवों को अपने शिक्षण व्यवहार एवं व्यावसायिक दक्षताओं के विकास से संबंधित माना। निष्कर्षतः विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम डीप .एड.एल.्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कौशल के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा दोनों के मध्य सार्थक अंतर्संबंध स्थापित होता है।

कुंजी शब्द: डी.एड.एल., विद्यालय इंटर्नशिप, शिक्षण कौशल, छात्राध्यापक, कक्षा प्रबंधन, शिक्षक प्रशिक्षण

प्रस्तावना

शिक्षक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना है जो विद्यालयी परिस्थितियों को समझते हुए प्रभावी शिक्षण कर सकें। डी .एड.एल. पाठ्यक्रम में विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम छात्राध्यापकों को वास्तविक कक्षा, विद्यार्थी व्यवहार, विद्यालय वातावरण, पाठ योजना, मूल्यांकन तथा सामुदायिक सहभागिता से जोड़ता है। यह केवल सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहार में बदलने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता, नेतृत्व, संप्रेषण कौशल और व्यावसायिक दृष्टिकोण विकसित करने का माध्यम भी है। वर्तमान समय में शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह केवल पाठ पढ़ाने वाला व्यक्ति न होकर एक संवेदनशील मार्गदर्शक, प्रबंधक, मूल्यांकनकर्ता, संप्रेषक और तकनीकी रूप से सक्षम शिक्षणकर्ता हो। इसी दृष्टि से विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम छात्राध्यापकों को वास्तविक शिक्षण अनुभव प्रदान करता है। प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि डी विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम ने छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल को किस सीमा तक प्रभावित .एड.एल. किया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

डीपाठ्यक्रम में इंटर्नशिप एक अनिवार्य घटक है .एड.एल., परंतु इसकी वास्तविक प्रभावशीलता का आकलन करना आवश्यक है। यदि इंटर्नशिप से छात्राध्यापकों में कक्षा प्रबंधन, पाठ योजना निर्माण, शिक्षण सामग्री चयन, मूल्यांकन एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, तो यह शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता का महत्वपूर्ण संकेतक है। यह अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों, मार्गदर्शक शिक्षकों, नीति निर्माताओं तथा डी पाठ्यक्रम .एड.एल. सुधार के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम एवं छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल के मध्य अंतर्संबंध का अध्ययन करना।
2. विद्यालय इंटर्नशिप अनुभवों एवं पाठ योजना निर्माण दक्षता के मध्य संबंध का विश्लेषण करना।
3. विद्यालय इंटर्नशिप एवं कक्षा प्रबंधन कौशल के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
4. विद्यालय इंटर्नशिप एवं छात्राध्यापकों के आत्मविश्वास, संप्रेषण कौशल तथा नेतृत्व क्षमता के मध्य संबंध का परीक्षण करना।
5. विद्यालय इंटर्नशिप एवं व्यावसायिक दक्षताओं के विकास के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पना

- **शून्य परिकल्पना (H_0)**- विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम एवं छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल के मध्य कोई सार्थक अंतर्संबंध नहीं है।
- **वैकल्पिक परिकल्पना (H_1)**- विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम एवं छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल के मध्य सार्थक सकारात्मक अंतर्संबंध है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन का आधार Excel शीट में उपलब्ध छात्राध्यापकों के उत्तर हैं। कुल 100 उत्तरदाताओं को विश्लेषण हेतु चयनित किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर किया गया।

जनसंख्या एवं नमूना

अध्ययन की जनसंख्या डी द्वितीय वर्ष के छात्राध्यापक हैं। अध्ययन हेतु .एड.एल.100 छात्राध्यापकों को नमूने के रूप में लिया गया।

तालिका 1: उत्तरदाताओं का लिंगानुसार वितरण

लिंग	संख्या	प्रतिशत
महिला	54	54%
पुरुष	45	45%
ट्रांस जेंडर	1	1%
कुल	100	100%

तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन में महिला छात्राध्यापकों की संख्या 54% तथा पुरुष छात्राध्यापकों की संख्या 45% रही। इससे स्पष्ट होता है कि डीप्रशिक्षण में महिला सहभागिता अपेक्षाकृत अधिक है। .एड.एल.

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

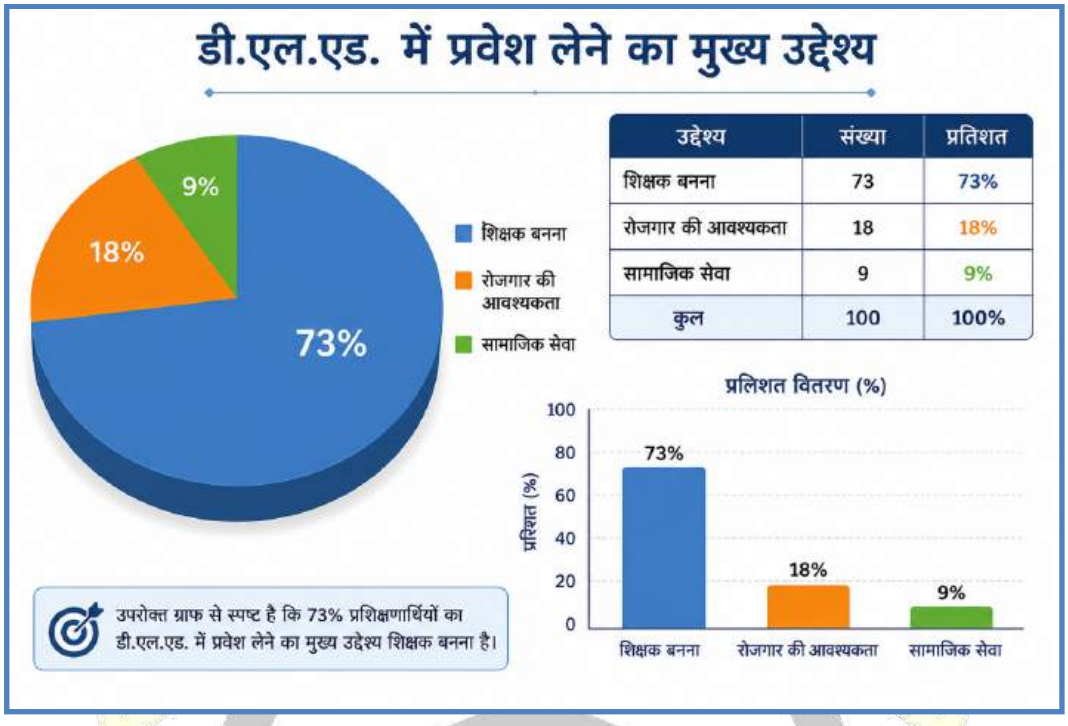

अधिकांश उत्तरदाताओं ने डी.एल.एड. में प्रवेश का मुख्य उद्देश्य शिक्षक बनना बताया। इससे स्पष्ट है कि छात्राध्यापकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक रुझान पाया गया। अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने का प्रमुख उद्देश्य शिक्षक बनना बताया। यह तथ्य इस बात का द्योतक है कि छात्राध्यापकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति एवं स्पष्ट व्यावसायिक लक्ष्य विद्यमान हैं। शिक्षक बनने की आकांक्षा रखने वाले प्रशिक्षणार्थी सामान्यतः शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं, विद्यार्थियों के समग्र विकास तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। इस प्रकार के प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के प्रति गंभीरता एवं समर्पण का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। यह परिणाम यह भी संकेत करता है कि डी.एल.एड. कार्यक्रम केवल रोजगार प्राप्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि अनेक छात्राध्यापक इसे समाज निर्माण एवं राष्ट्र विकास में योगदान देने के अवसर के रूप में देखते हैं। शिक्षण व्यवसाय के प्रति यह सकारात्मक दृष्टिकोण प्रशिक्षण प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है, क्योंकि जब प्रशिक्षणार्थी स्वेच्छा एवं रुचि के साथ शिक्षक बनने का लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तब वे शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन क्षमता तथा व्यावसायिक नैतिकता जैसे गुणों के विकास के प्रति अधिक सजग रहते हैं। इसके अतिरिक्त यह निष्कर्ष भी महत्वपूर्ण है कि शिक्षक शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रदान किया जाने वाला प्रशिक्षण छात्राध्यापकों की व्यावसायिक आकांक्षाओं के अनुरूप है। शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक रुझान भविष्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों के निर्माण की संभावना को सुदृढ़ करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश प्रशिक्षणार्थियों ने डी.एल.एड. कार्यक्रम को अपने व्यावसायिक विकास एवं शिक्षक बनने के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में स्वीकार किया है।

तालिका 3: इंटर्नशिप से पहले शिक्षण कौशल की तैयारी

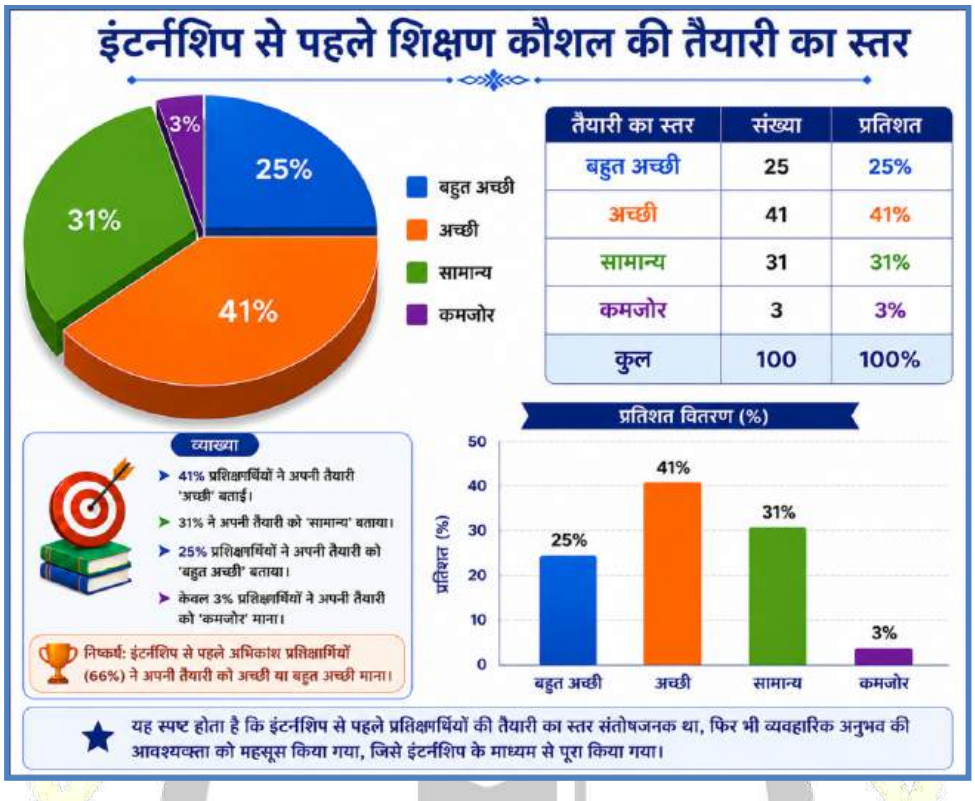

इंटर्नशिप से पहले 66% छात्राध्यापकों ने अपनी तैयारी अच्छी या बहुत अच्छी मानी, जबकि 31% ने सामान्य और 3% ने कमजोर बताया। इससे स्पष्ट है कि इंटर्नशिप से पूर्व छात्राध्यापकों में आधारभूत तैयारी थी, परंतु व्यावहारिक दक्षता के विकास की आवश्यकता बनी हुई थी। तालिका 3 के आंकड़ों से ज्ञात होता है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रारंभ होने से पूर्व 66% छात्राध्यापकों ने अपनी शिक्षण कौशल संबंधी तैयारी को *अच्छी* अथवा *बहुत अच्छी* श्रेणी में रखा। इसके विपरीत 31% छात्राध्यापकों ने अपनी तैयारी को *सामान्य* तथा केवल 3% ने *कमजोर* बताया। यह स्थिति दर्शाती है कि अधिकांश प्रशिक्षणार्थियों के पास शिक्षण संबंधी सैद्धांतिक ज्ञान, पाठ्यक्रम की समझ तथा शिक्षण के मूलभूत सिद्धांतों की जानकारी पहले से उपलब्ध थी। शिक्षक शिक्षा संस्थानों में प्राप्त शैक्षणिक प्रशिक्षण ने उनके भीतर शिक्षण के प्रति प्रारंभिक आत्मविश्वास एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया था। यद्यपि अधिकांश छात्राध्यापक अपनी तैयारी को संतोषजनक मानते थे, तथापि आंकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि उनके पास वास्तविक विद्यालयी परिस्थितियों में शिक्षण का पर्याप्त अनुभव नहीं था। शिक्षण कौशल का प्रभावी विकास केवल सैद्धांतिक अध्ययन से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए कक्षा-कक्ष में प्रत्यक्ष अनुभव, विद्यार्थियों के साथ अंतःक्रिया, समय प्रबंधन, शिक्षण-सामग्री का उपयोग तथा व्यवहारिक समस्याओं के समाधान की क्षमता भी आवश्यक होती है। यही कारण है कि 31% प्रशिक्षणार्थियों ने अपनी तैयारी को केवल सामान्य स्तर का माना, जो व्यावहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता को इंगित करता है। कमजोर तैयारी बताने वाले 3% प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति यह संकेत करती है कि कुछ छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास, शिक्षण-अनुभव अथवा विषयगत प्रस्तुतीकरण संबंधी कौशल अपेक्षाकृत कम विकसित थे। ऐसे प्रशिक्षणार्थियों के लिए विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि यह उन्हें वास्तविक शिक्षण परिस्थितियों का अनुभव प्रदान करता है तथा उनकी कमियों को दूर करने का अवसर देता है।

तालिका 4: पाठ योजना निर्माण में इंटर्नशिप के बाद दक्षता

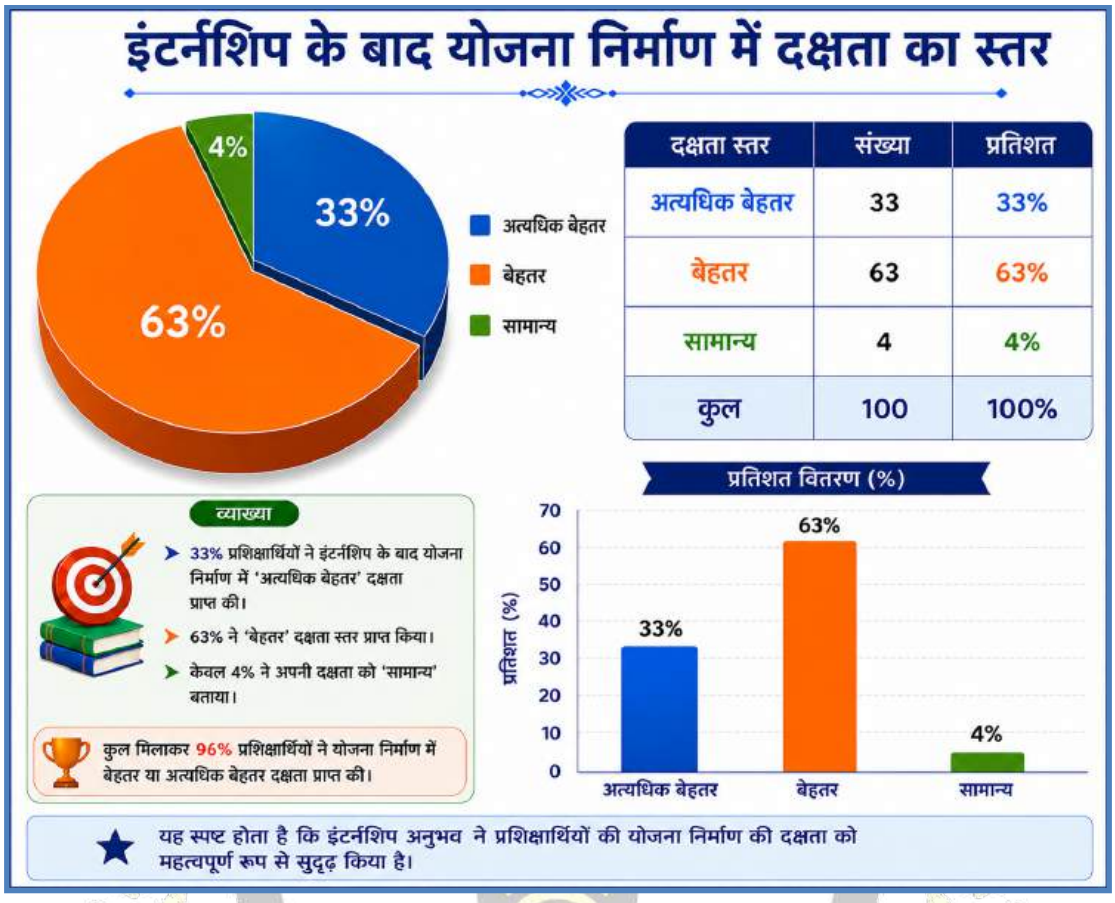

तालिका 4 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम के पश्चात छात्राध्यापकों की पाठ योजना निर्माण संबंधी दक्षता में उल्लेखनीय सुधार हुआ। अध्ययन में 96% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि इंटर्नशिप के बाद उनकी पाठ योजना बनाने की क्षमता *बेहतर* अथवा *अत्यधिक बेहतर* हुई है, जबकि केवल 4% उत्तरदाताओं ने अपनी दक्षता को सामान्य स्तर का बताया। यह परिणाम दर्शाता है कि विद्यालयी परिवेश में प्रत्यक्ष शिक्षण अनुभव प्राप्त करने से छात्राध्यापकों को पाठ योजना निर्माण की वास्तविक प्रक्रिया को समझने और उसे व्यवहार में लागू करने का अवसर प्राप्त हुआ। पाठ योजना शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण आधार है, क्योंकि इसके माध्यम से शिक्षक शिक्षण उद्देश्यों, विषय-वस्तु, शिक्षण विधियों, अधिगम गतिविधियों, शिक्षण-सहायक सामग्री तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं का पूर्व नियोजन करता है। इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों को नियमित रूप से पाठ योजनाएँ तैयार करने, उनका प्रस्तुतीकरण करने तथा मार्गदर्शक शिक्षकों से प्रतिपुष्टि (Feedback) प्राप्त करने का अवसर मिला। इस प्रक्रिया ने उनकी योजना निर्माण क्षमता को अधिक व्यवस्थित, व्यावहारिक एवं प्रभावी बनाया। अध्ययन से यह भी संकेत मिलता है कि इंटर्नशिप ने छात्राध्यापकों को विभिन्न शिक्षण परिस्थितियों के अनुरूप पाठ योजना तैयार करने की समझ विकसित की। उन्होंने विद्यार्थियों की आवश्यकता, कक्षा स्तर, उपलब्ध संसाधनों तथा समय प्रबंधन को ध्यान में रखते हुए शिक्षण योजनाएँ बनाना सीखा। इसके परिणामस्वरूप उनकी शिक्षण प्रक्रिया अधिक उद्देश्यपूर्ण एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनी। इसके अतिरिक्त इंटर्नशिप अनुभवों ने छात्राध्यापकों में नवाचारपूर्ण शिक्षण गतिविधियों, शिक्षण-अधिगम सामग्री के उपयोग तथा सतत मूल्यांकन को पाठ योजना का अभिन्न अंग बनाने की प्रवृत्ति विकसित की। इससे उनकी व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि हुई तथा वे वास्तविक विद्यालयी परिस्थितियों में अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षण करने के लिए तैयार हुए।

तालिका 5: कक्षा प्रबंधन एवं अनुशासन क्षमता में वृद्धि

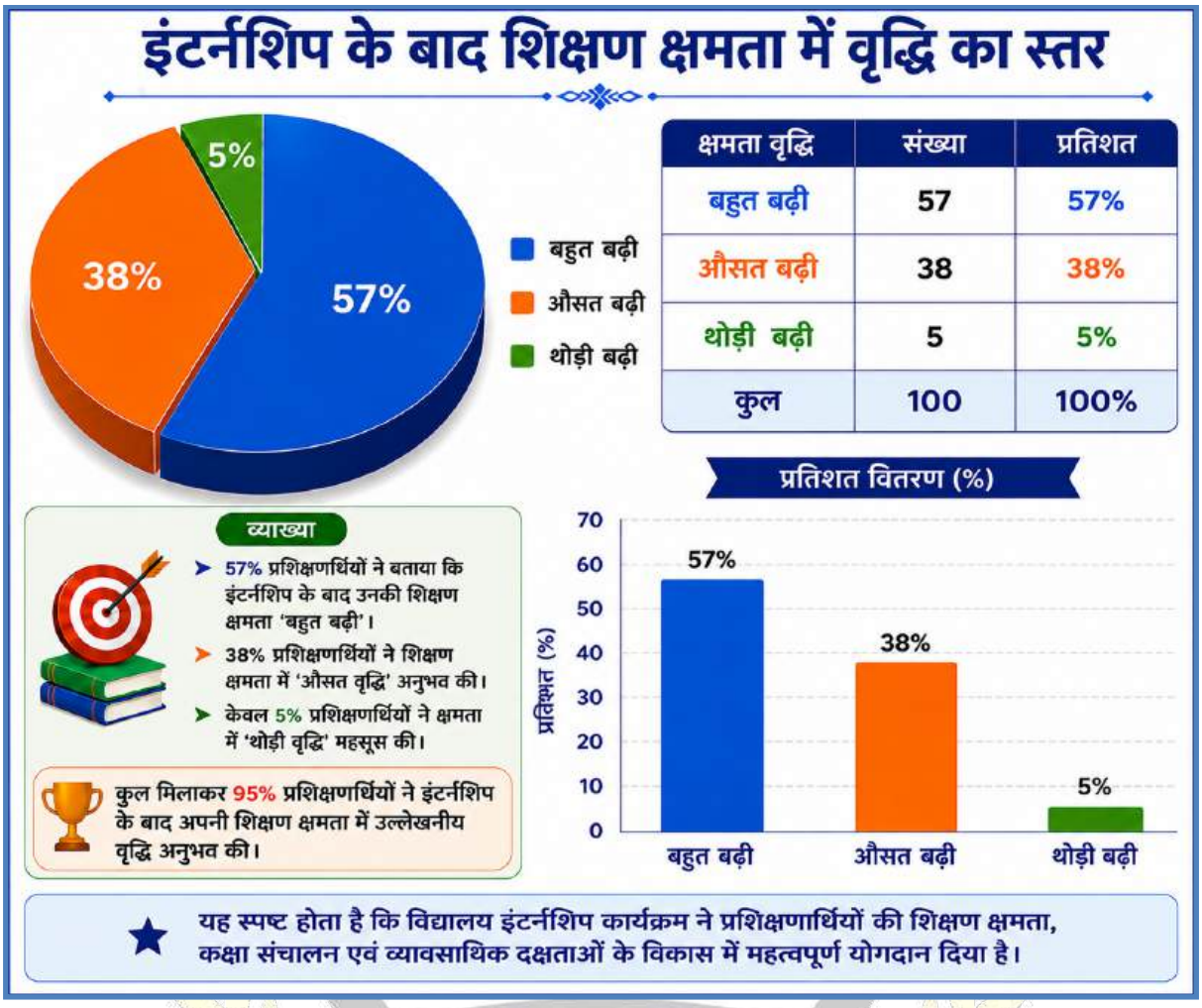

तालिका 5 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम के पश्चात छात्राध्यापकों की कक्षा प्रबंधन एवं अनुशासन बनाए रखने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। अध्ययन में 95% छात्राध्यापकों ने स्वीकार किया कि इंटर्नशिप के दौरान एवं उसके पश्चात उनकी कक्षा संचालन क्षमता में सकारात्मक सुधार हुआ। यह परिणाम दर्शाता है कि वास्तविक विद्यालयी परिवेश में कार्य करने से प्रशिक्षणार्थियों को कक्षा-कक्ष की विविध परिस्थितियों, विद्यार्थियों के व्यवहार तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के व्यावहारिक पक्षों को निकटता से समझने का अवसर प्राप्त हुआ। कक्षा प्रबंधन एक प्रभावी शिक्षक की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। इसमें विद्यार्थियों को अनुशासित बनाए रखना, समय का उचित उपयोग करना, कक्षा में सकारात्मक अधिगम वातावरण निर्मित करना तथा शिक्षण गतिविधियों को व्यवस्थित रूप से संचालित करना शामिल है। इंटर्नशिप से पूर्व अधिकांश छात्राध्यापकों के पास इन कौशलों का केवल सैद्धांतिक ज्ञान था, किंतु विद्यालय इंटर्नशिप ने उन्हें इन सिद्धांतों को वास्तविक परिस्थितियों में लागू करने का अवसर प्रदान किया। परिणामस्वरूप वे विद्यार्थियों के व्यवहार को समझने, उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप प्रतिक्रिया देने तथा कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में अधिक सक्षम बने। अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों ने विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों के साथ कार्य किया, जिससे उनमें व्यवहार प्रबंधन एवं समस्या समाधान की क्षमता विकसित हुई। उन्होंने यह सीखा कि केवल कठोर अनुशासन ही प्रभावी कक्षा प्रबंधन का आधार नहीं है, बल्कि सकारात्मक संवाद, सहयोगात्मक वातावरण तथा प्रेरणात्मक शिक्षण भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। इस अनुभव ने उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया तथा उन्हें भविष्य के शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका को बेहतर ढंग से निभाने के लिए तैयार किया।

तालिका 6: विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने में सफलता

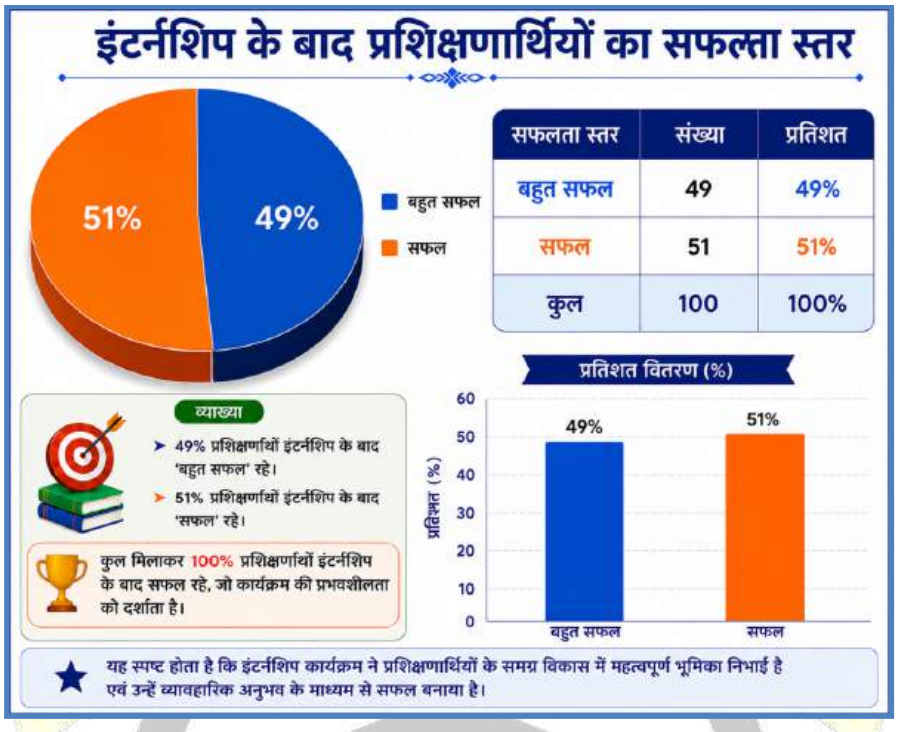

तालिका 6 के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने की दृष्टि से अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ। अध्ययन में सम्मिलित सभी उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे इंटर्नशिप के दौरान विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने में सफल रहे। यह परिणाम इस तथ्य को रेखांकित करता है कि विद्यालय इंटर्नशिप ने छात्राध्यापकों को पारंपरिक व्याख्यान पद्धति से आगे बढ़कर संवादात्मक, सहभागितापूर्ण एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण विधियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सहभागिता अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि जब विद्यार्थी सक्रिय रूप से कक्षा गतिविधियों में भाग लेते हैं, तब उनका अधिगम अधिक प्रभावी, स्थायी एवं अर्थपूर्ण बनता है। इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों ने समूह चर्चा, प्रश्नोत्तर, परियोजना कार्य, खेल आधारित गतिविधियों, शिक्षण-सहायक सामग्रियों तथा सहयोगात्मक अधिगम जैसी विधियों का प्रयोग किया, जिससे विद्यार्थियों की रुचि एवं सहभागिता में वृद्धि हुई। इन अनुभवों ने प्रशिक्षणार्थियों को यह समझने में सहायता प्रदान की कि प्रभावी शिक्षण केवल विषय-वस्तु प्रस्तुत करने तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को अधिगम प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार बनाना भी आवश्यक है। अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि विद्यालयी वातावरण में प्रत्यक्ष शिक्षण अनुभव प्राप्त करने से छात्राध्यापकों के संप्रेषण कौशल एवं कक्षा संचालन क्षमता में सुधार हुआ। उन्होंने विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक संवाद स्थापित करना, उनकी जिज्ञासाओं को प्रोत्साहित करना तथा सहभागितापूर्ण वातावरण का निर्माण करना सीखा। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में सीखने के प्रति उत्साह एवं रुचि बढ़ी, जिसने शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाया। इसके अतिरिक्त इंटर्नशिप ने छात्राध्यापकों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं सीखने की विभिन्न शैलियों को समझने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि प्रत्येक विद्यार्थी की अधिगम गति एवं रुचियाँ भिन्न होती हैं, इसलिए शिक्षण रणनीतियों में लचीलापन एवं विविधता आवश्यक है। इस समझ ने उन्हें विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया, जिससे कक्षा में अधिकाधिक विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित हो सकी।

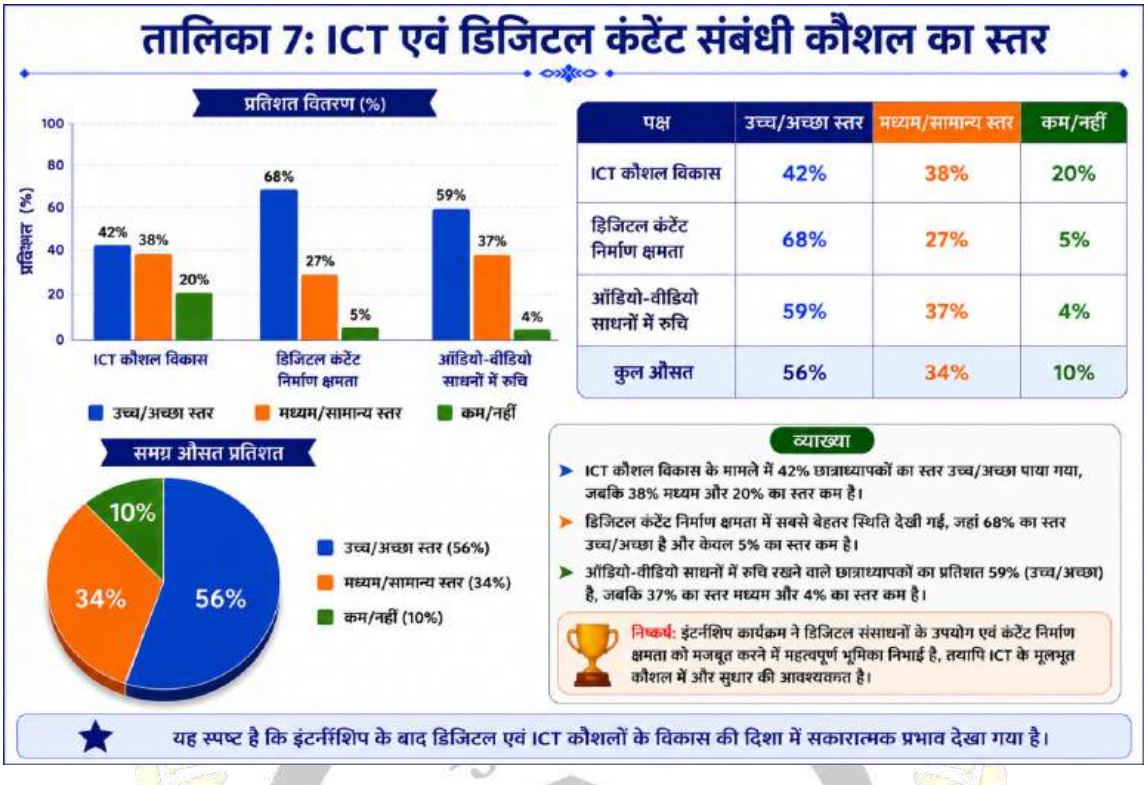

तालिका 7 के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम का छात्राध्यापकों के ICT एवं डिजिटल कंटेंट संबंधी कौशलों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा, यद्यपि विभिन्न आयामों में विकास का स्तर भिन्न-भिन्न पाया गया। अध्ययन में ICT कौशल विकास के संबंध में 42% छात्राध्यापकों ने अपने कौशल को उच्च अथवा अच्छा स्तर का बताया, जबकि 38% ने इसे मध्यम अथवा सामान्य स्तर का माना। इसके विपरीत 20% छात्राध्यापकों ने स्वीकार किया कि उनके ICT कौशल अभी भी कम विकसित हैं या पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हो सके हैं। यह परिणाम दर्शाता है कि यद्यपि डिजिटल तकनीकों के प्रति जागरूकता एवं रुचि में वृद्धि हुई है, फिर भी सभी प्रशिक्षणार्थियों को समान स्तर पर तकनीकी दक्षता प्राप्त नहीं हो सकी है। डिजिटल कंटेंट निर्माण क्षमता के संदर्भ में अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए। 68% छात्राध्यापकों ने स्वयं को डिजिटल कंटेंट निर्माण में उच्च अथवा अच्छे स्तर का सक्षम माना, जबकि 27% ने मध्यम स्तर तथा केवल 5% ने कम स्तर की दक्षता स्वीकार की। यह स्थिति इंगित करती है कि इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को डिजिटल प्रस्तुतीकरण, शिक्षण सामग्री निर्माण, ई-कंटेंट, प्रेजेंटेशन एवं ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों के उपयोग का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ, जिससे उनकी रचनात्मक एवं तकनीकी क्षमताओं में वृद्धि हुई। ऑडियो-वीडियो साधनों के उपयोग के प्रति रुचि के आंकड़े भी उल्लेखनीय हैं। 59% छात्राध्यापकों ने इन साधनों के उपयोग में उच्च स्तर की रुचि व्यक्त की, जबकि 37% ने मध्यम स्तर की रुचि दिखाई। केवल 4% छात्राध्यापकों ने इस क्षेत्र में कम रुचि व्यक्त की। यह परिणाम इस तथ्य को पुष्ट करता है कि आधुनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में मल्टीमीडिया संसाधनों का महत्व बढ़ रहा है और प्रशिक्षणार्थी भी इन तकनीकों को अपनाने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर रहे हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम ने छात्राध्यापकों को डिजिटल शिक्षण वातावरण से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने स्मार्ट कक्षा, डिजिटल सामग्री, प्रोजेक्टर, वीडियो आधारित शिक्षण तथा ऑनलाइन संसाधनों के उपयोग का अनुभव प्राप्त किया। इससे उनकी शिक्षण प्रक्रिया अधिक आकर्षक, सहभागी एवं प्रभावी बनने की दिशा में अग्रसर हुई। तथापि ICT कौशल विकास के क्षेत्र में अपेक्षाकृत कम प्रतिशत यह संकेत करता है कि अनेक विद्यालयों में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, इंटरनेट सुविधा तथा डिजिटल प्रशिक्षण के अवसर अभी भी सीमित हैं।

तालिका 8: मूल्यांकन कौशल में सुधार

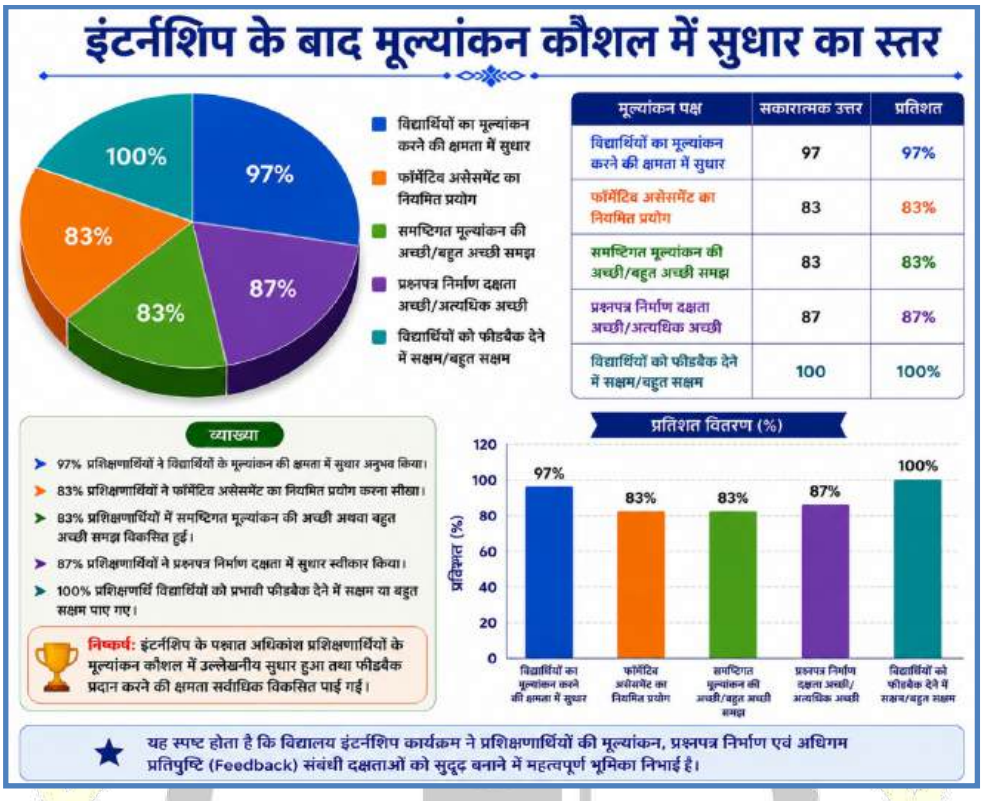

तालिका 8 के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम ने छात्राध्यापकों के मूल्यांकन संबंधी कौशलों के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश प्रशिक्षणार्थियों ने स्वीकार किया कि इंटर्नशिप के पश्चात विद्यार्थियों के अधिगम का मूल्यांकन करने, प्रश्नपत्र निर्माण करने, फॉर्मेटिव असेसमेंट का उपयोग करने तथा विद्यार्थियों को प्रभावी प्रतिपुष्टि (Feedback) प्रदान करने की उनकी क्षमता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। यह परिणाम इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि वास्तविक विद्यालयी अनुभवों ने छात्राध्यापकों को मूल्यांकन की प्रक्रियाओं को व्यवहारिक रूप से समझने और लागू करने का अवसर प्रदान किया। आंकड़ों के अनुसार 97% छात्राध्यापकों ने विद्यार्थियों के मूल्यांकन की क्षमता में सुधार अनुभव किया। इससे स्पष्ट होता है कि इंटर्नशिप के दौरान उन्हें विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धियों का आकलन करने, उनकी प्रगति का निरीक्षण करने तथा सीखने की कठिनाइयों की पहचान करने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ। इस अनुभव ने उनके मूल्यांकन कौशल को अधिक व्यवस्थित एवं उद्देश्यपरक बनाया। फॉर्मेटिव असेसमेंट के नियमित प्रयोग के संबंध में 83% प्रशिक्षणार्थियों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। यह संकेत करता है कि इंटर्नशिप ने छात्राध्यापकों को सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous Assessment) की अवधारणा को व्यवहार में लागू करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कक्षा गतिविधियों, मौखिक प्रश्नों, गृहकार्य, परियोजनाओं एवं दैनिक प्रदर्शन के आधार पर विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन करना सीखा। इससे मूल्यांकन केवल परीक्षा-केंद्रित न होकर अधिगम सुधार का माध्यम बन सका। समष्टिगत मूल्यांकन (Summative Assessment) की समझ के संदर्भ में भी 83% छात्राध्यापकों ने अच्छी अथवा बहुत अच्छी समझ विकसित होने की बात स्वीकार की। यह परिणाम दर्शाता है कि प्रशिक्षणार्थियों ने अंतिम उपलब्धि परीक्षणों, वार्षिक परीक्षाओं तथा उपलब्धि मापन की प्रक्रियाओं को समझने और उनके उपयोग की दक्षता विकसित की। इससे वे विद्यार्थियों की समग्र शैक्षिक उपलब्धि का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करने में सक्षम हुए।

प्रश्नपत्र निर्माण दक्षता के क्षेत्र में 87% छात्राध्यापकों ने सकारात्मक सुधार अनुभव किया। इंटर्नशिप के दौरान उन्हें शिक्षण उद्देश्यों के अनुरूप प्रश्न तैयार करने, विभिन्न कठिनाई स्तरों के प्रश्नों का चयन करने तथा मूल्यांकन की वैध एवं विश्वसनीय प्रक्रियाओं को अपनाने का अवसर मिला।

इससे उनकी शैक्षणिक योजना एवं मूल्यांकन संबंधी दक्षता में वृद्धि हुई। अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि विद्यार्थियों को फीडबैक देने की क्षमता के संदर्भ में 100% छात्राध्यापक सक्षम अथवा बहुत सक्षम पाए गए। यह परिणाम दर्शाता है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम ने प्रशिक्षणार्थियों को केवल त्रुटियों की पहचान करना ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को सुधारात्मक सुझाव प्रदान करना, उनकी उपलब्धियों को प्रोत्साहित करना तथा अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए मार्गदर्शन देना भी सिखाया। आधुनिक शिक्षाशास्त्र में फीडबैक को प्रभावी अधिगम का आधार माना जाता है, इसलिए यह उपलब्धि अत्यंत महत्वपूर्ण है।

तालिका 9: व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक कौशल में वृद्धि

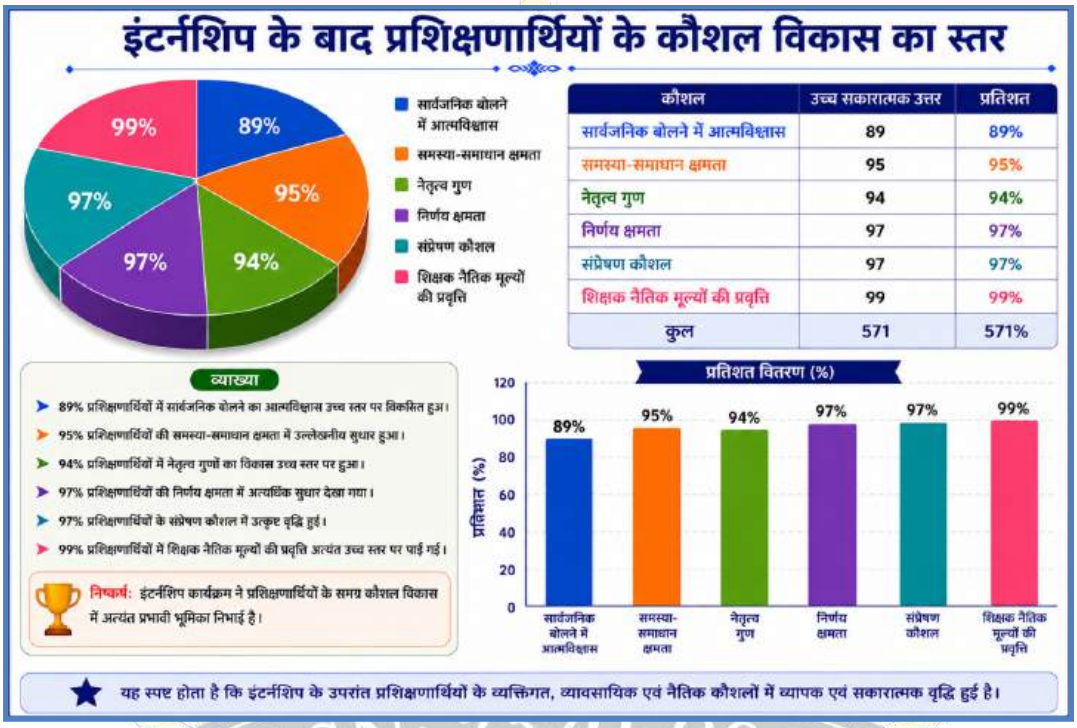

तालिका 9 के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम का प्रभाव केवल छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उनके व्यक्तित्व विकास एवं व्यावसायिक दक्षताओं के संवर्धन में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही। अध्ययन में सार्वजनिक बोलने में आत्मविश्वास, समस्या-समाधान क्षमता, नेतृत्व गुण, निर्णय क्षमता, संप्रेषण कौशल तथा शिक्षक नैतिक मूल्यों जैसे आयामों का विश्लेषण किया गया। सभी आयामों में उच्च स्तर की सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं, जो इंटर्नशिप कार्यक्रम की व्यापक प्रभावशीलता को दर्शाती हैं। आंकड़ों के अनुसार 89% छात्राध्यापकों ने सार्वजनिक रूप से बोलने के आत्मविश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि अनुभव की। विद्यालयी वातावरण में नियमित शिक्षण, प्रार्थना सभा, कक्षा-चर्चा तथा विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुतीकरण के अवसरों ने उनके मंचीय भय को कम किया तथा आत्मविश्वास को सुदृढ़ बनाया। यह आत्मविश्वास भविष्य में प्रभावी शिक्षक बनने के लिए अत्यंत आवश्यक माना जाता है। समस्या-समाधान क्षमता के संबंध में 95% छात्राध्यापकों ने सकारात्मक सुधार अनुभव किया। इंटर्नशिप के दौरान उन्हें विभिन्न शैक्षणिक एवं व्यवहारिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, जिनका समाधान खोजने की प्रक्रिया ने उनकी विश्लेषणात्मक एवं निर्णयात्मक सोच को विकसित किया। इससे वे वास्तविक विद्यालयी समस्याओं को समझने तथा उनका व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करने में अधिक सक्षम बने। नेतृत्व गुणों के विकास के संदर्भ में 94% छात्राध्यापकों ने सकारात्मक वृद्धि की पुष्टि की। विद्यालयी गतिविधियों, समूह कार्यों, सहशैक्षिक कार्यक्रमों तथा कक्षा संचालन के अनुभवों ने उनमें नेतृत्व क्षमता, उत्तरदायित्व बोध एवं संगठनात्मक दक्षताओं का विकास किया। यह गुण भविष्य में विद्यालयी प्रबंधन एवं शिक्षण नेतृत्व की दृष्टि से अत्यंत

महत्वपूर्ण हैं। निर्णय क्षमता एवं संप्रेषण कौशल के क्षेत्र में 97% छात्राध्यापकों ने उच्च स्तर की प्रगति अनुभव की। इंटर्नशिप के दौरान विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के साथ निरंतर संवाद स्थापित करने के अवसर प्राप्त हुए, जिससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता, सुनने की दक्षता तथा प्रभावी संचार कौशल विकसित हुए। साथ ही विभिन्न परिस्थितियों में त्वरित एवं उचित निर्णय लेने की क्षमता भी सुदृढ़ हुई, जो एक सफल शिक्षक की महत्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है। अध्ययन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि 99% छात्राध्यापकों में शिक्षक नैतिक मूल्यों की प्रवृत्ति उच्च स्तर पर विकसित हुई। विद्यालयी वातावरण में कार्य करते हुए उन्होंने समयपालन, उत्तरदायित्व, निष्पक्षता, विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशीलता, व्यावसायिक आचरण तथा शिक्षकीय मर्यादाओं का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया। इससे उनमें शिक्षकीय नैतिकता एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विकास हुआ, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की आधारशिला है।

तालिका 10: शिक्षण कौशल में सर्वाधिक सुधार का क्षेत्र

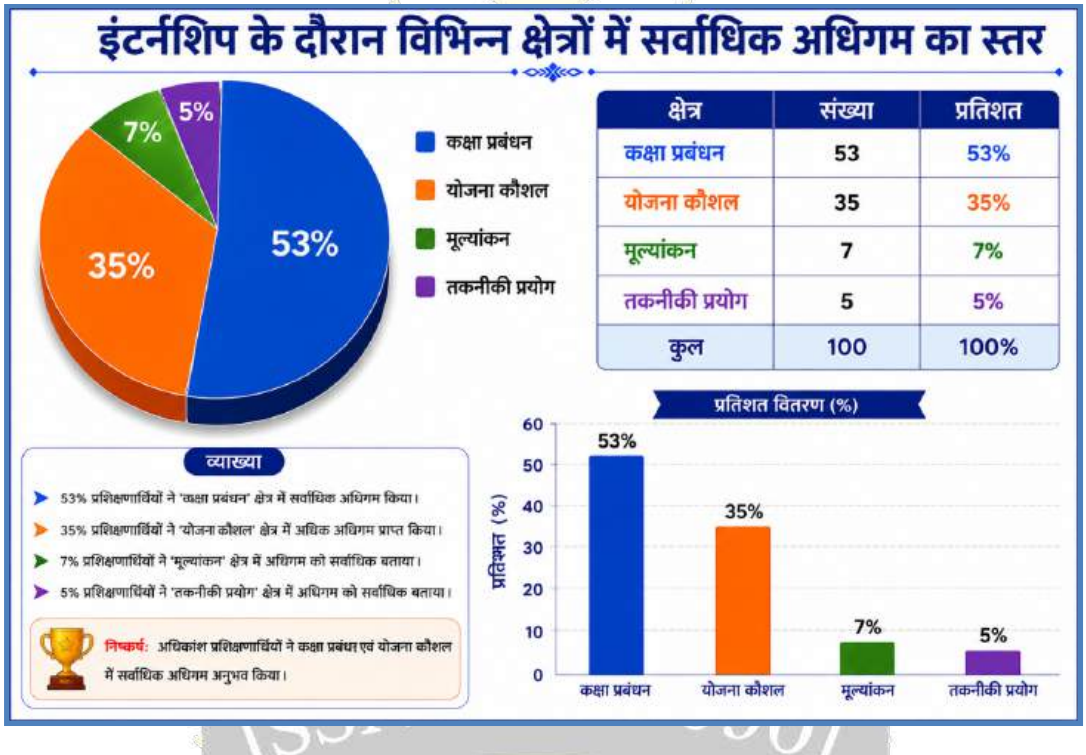

तालिका 10 के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम ने छात्राध्यापकों के विभिन्न शिक्षण कौशलों को प्रभावित किया, किंतु सुधार का स्तर सभी क्षेत्रों में समान नहीं रहा। अध्ययन में 53% छात्राध्यापकों ने कक्षा प्रबंधन को वह क्षेत्र बताया जिसमें उन्हें सर्वाधिक सुधार अनुभव हुआ। इसके पश्चात 35% छात्राध्यापकों ने योजना कौशल (Lesson Planning Skills) में सर्वाधिक सुधार की पुष्टि की। वहीं केवल 7% छात्राध्यापकों ने मूल्यांकन संबंधी कौशल तथा 5% ने तकनीकी प्रयोग (ICT एवं डिजिटल साधनों के उपयोग) को अपने सर्वाधिक विकसित क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया। कक्षा प्रबंधन में सर्वाधिक सुधार प्राप्त होना अत्यंत महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। विद्यालय इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों को प्रतिदिन वास्तविक कक्षाओं का संचालन करने, विद्यार्थियों के व्यवहार को समझने, अनुशासन बनाए रखने तथा शिक्षण-अधिगम गतिविधियों का समन्वय करने का अवसर प्राप्त हुआ। इन प्रत्यक्ष अनुभवों ने उन्हें कक्षा में उत्पन्न होने वाली वास्तविक चुनौतियों से परिचित कराया और उनके समाधान हेतु आवश्यक व्यवहारिक कौशल विकसित किए। परिणामस्वरूप अधिकांश प्रशिक्षणार्थियों ने स्वयं को कक्षा संचालन एवं प्रबंधन में अधिक दक्ष अनुभव किया। योजना कौशल के क्षेत्र में 35% छात्राध्यापकों द्वारा सर्वाधिक सुधार अनुभव किया जाना यह दर्शाता है कि इंटर्नशिप ने उन्हें व्यवस्थित एवं उद्देश्यपरक शिक्षण की प्रक्रिया को समझने में सहायता प्रदान की। विद्यालयी शिक्षण के दौरान नियमित रूप से पाठ योजनाएँ तैयार करने, शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण करने, उपयुक्त शिक्षण विधियों का चयन करने तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं को सम्मिलित करने का अवसर मिला। इससे उनकी पाठ योजना निर्माण क्षमता अधिक प्रभावी एवं व्यावहारिक बनी। मूल्यांकन कौशल को सर्वाधिक सुधार का क्षेत्र

बताने वाले छात्राध्यापकों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम (7%) पाया गया, जबकि पूर्ववर्ती तालिकाओं से यह स्पष्ट हो चुका है कि मूल्यांकन क्षमता में व्यापक सुधार हुआ था। इसका अर्थ यह नहीं है कि मूल्यांकन कौशल में सुधार नहीं हुआ, बल्कि यह दर्शाता है कि प्रशिक्षणार्थियों ने कक्षा प्रबंधन एवं योजना कौशल की तुलना में मूल्यांकन कौशल में अपेक्षाकृत कम प्रत्यक्ष परिवर्तन अनुभव किया। इसी प्रकार केवल 5% छात्राध्यापकों ने तकनीकी प्रयोग को अपने सर्वाधिक विकसित क्षेत्र के रूप में स्वीकार किया, जो इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि विद्यालयों में ICT संसाधनों की उपलब्धता एवं तकनीकी प्रशिक्षण के अवसर अभी भी सीमित हो सकते हैं। अध्ययन का यह निष्कर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि विद्यालय इंटर्नशिप का सबसे प्रत्यक्ष एवं गहरा प्रभाव वास्तविक कक्षा संचालन तथा शिक्षण नियोजन से संबंधित कौशलों पर पड़ा। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि इंटर्नशिप का अधिकांश समय प्रशिक्षणार्थी कक्षा-कक्ष में विद्यार्थियों के साथ प्रत्यक्ष शिक्षण करते हुए व्यतीत करते हैं। इसी प्रक्रिया में वे शिक्षण की व्यावहारिक चुनौतियों, समय प्रबंधन, अनुशासन व्यवस्था तथा पाठ योजना के वास्तविक उपयोग को समझते हैं।

तालिका 11: इंटर्नशिप से आत्मविश्वास एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन

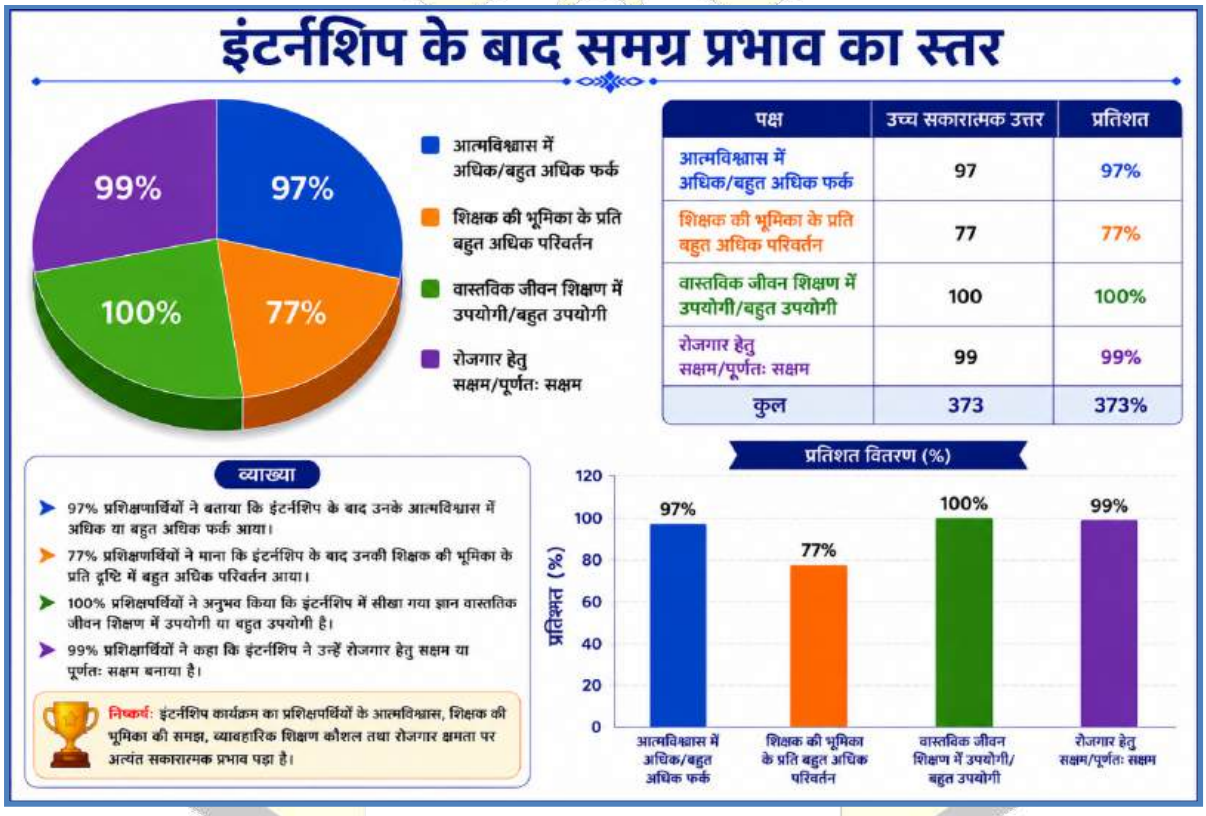

तालिका 11 के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम ने छात्राध्यापकों के आत्मविश्वास, व्यावसायिक दृष्टिकोण तथा शिक्षक की भूमिका के प्रति उनकी समझ में अत्यंत सकारात्मक परिवर्तन उत्पन्न किया। अध्ययन में 97% छात्राध्यापकों ने स्वीकार किया कि इंटर्नशिप के पश्चात उनके आत्मविश्वास में *अधिक* अथवा *बहुत अधिक* वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त 77% प्रशिक्षणार्थियों ने शिक्षक की भूमिका के प्रति अपने दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन अनुभव किया। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि 100% उत्तरदाताओं ने इंटर्नशिप को वास्तविक जीवन शिक्षण के लिए उपयोगी अथवा अत्यंत उपयोगी माना, जबकि 99% छात्राध्यापकों ने स्वयं को रोजगार के लिए सक्षम अथवा पूर्णतः सक्षम महसूस किया।

आत्मविश्वास में प्राप्त उच्च वृद्धि इस बात का संकेत है कि विद्यालयी वातावरण में प्रत्यक्ष शिक्षण अनुभव ने छात्राध्यापकों के भीतर शिक्षण कार्य के प्रति विश्वास एवं दक्षता का विकास किया। इंटर्नशिप से पूर्व अनेक प्रशिक्षणार्थी कक्षा के समक्ष प्रस्तुतीकरण, विद्यार्थियों के प्रश्नों का उत्तर देने तथा शिक्षण गतिविधियों के संचालन को लेकर संकोच अनुभव करते थे, किंतु वास्तविक विद्यालयी अनुभवों ने उनके आत्मविश्वास को सुदृढ़

बनाया। नियमित शिक्षण अभ्यास, मार्गदर्शक शिक्षकों का सहयोग तथा विद्यार्थियों के साथ निरंतर संवाद ने उन्हें शिक्षण प्रक्रिया में अधिक सहज एवं सक्षम बनाया।

शिक्षक की भूमिका के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन भी अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। 77% छात्राध्यापकों ने स्वीकार किया कि इंटर्नशिप के बाद उन्होंने शिक्षक के कार्य एवं उत्तरदायित्वों को अधिक गहराई से समझा। इंटर्नशिप से पूर्व अधिकांश प्रशिक्षणार्थी शिक्षक की भूमिका को केवल विषय-वस्तु के प्रस्तुतीकरण तक सीमित मानते थे, किंतु विद्यालयी अनुभवों ने उन्हें यह समझने में सहायता प्रदान की कि एक शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह मार्गदर्शक, प्रेरक, मूल्यांकनकर्ता, सलाहकार तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण का प्रमुख माध्यम भी होता है। इस अनुभव ने उनके व्यावसायिक दृष्टिकोण को अधिक परिपक्व एवं उत्तरदायी बनाया।

अध्ययन में सभी उत्तरदाताओं द्वारा इंटर्नशिप को वास्तविक जीवन शिक्षण के लिए उपयोगी माना जाना इस कार्यक्रम की प्रभावशीलता का सशक्त प्रमाण है। यह परिणाम दर्शाता है कि इंटर्नशिप ने प्रशिक्षणार्थियों को वास्तविक विद्यालयी परिस्थितियों, विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं, कक्षा प्रबंधन, समय प्रबंधन तथा शिक्षण की व्यवहारिक चुनौतियों से परिचित कराया। इस प्रत्यक्ष अनुभव ने सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक शिक्षण के मध्य की दूरी को कम किया तथा प्रशिक्षणार्थियों को वास्तविक शिक्षण जीवन के लिए तैयार किया।

रोजगार के लिए स्वयं को सक्षम महसूस करने वाले 99% प्रशिक्षणार्थियों का प्रतिशत यह दर्शाता है कि विद्यालय इंटर्नशिप ने उनके व्यावसायिक आत्मविश्वास एवं रोजगार-योग्यता (Employability) को भी सुदृढ़ किया। उन्होंने शिक्षण कौशल, संप्रेषण क्षमता, नेतृत्व गुण, निर्णय क्षमता तथा व्यावसायिक व्यवहार जैसे आवश्यक गुणों का विकास किया, जो एक सफल शिक्षक बनने के लिए अनिवार्य हैं। इस प्रकार इंटर्नशिप कार्यक्रम ने प्रशिक्षणार्थियों को न केवल शैक्षणिक रूप से बल्कि व्यावसायिक रूप से भी सशक्त बनाया।

तालिका 12: भविष्य के शिक्षक प्रशिक्षण में इंटर्नशिप की आवश्यकता

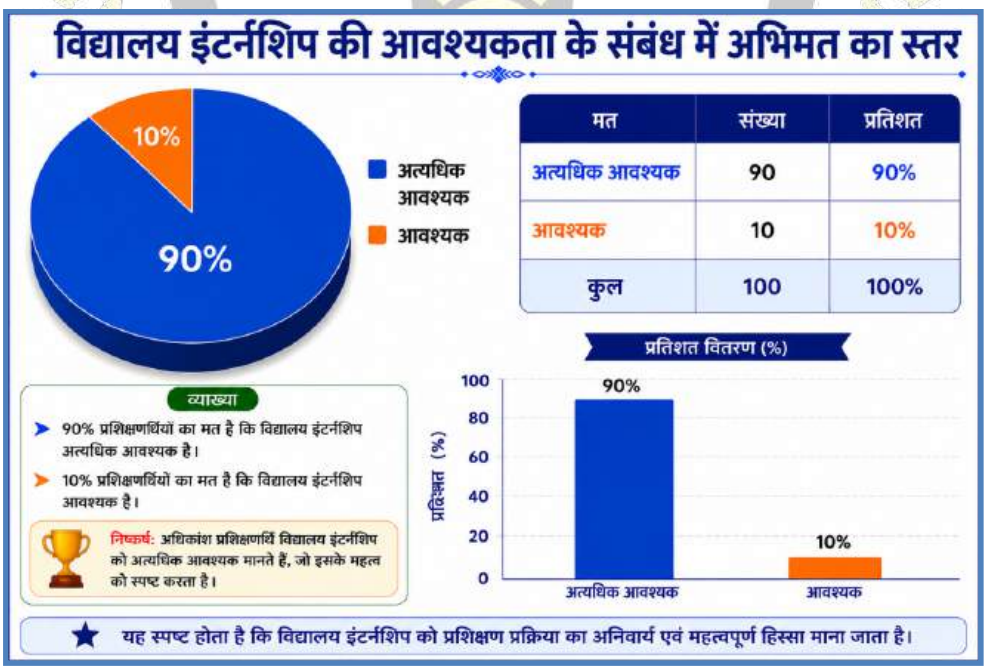

तालिका 12 के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम को छात्राध्यापक भविष्य के शिक्षक प्रशिक्षण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य घटक मानते हैं। अध्ययन में सम्मिलित सभी उत्तरदाताओं ने इंटर्नशिप की आवश्यकता को स्वीकार किया, जिनमें से 90% ने इसे *अत्यधिक आवश्यक* तथा शेष 10% ने *आवश्यक* बताया। यह परिणाम इस तथ्य को रेखांकित करता है कि छात्राध्यापक स्वयं

विद्यालय इंटर्नशिप के महत्व को समझते हैं तथा इसे शिक्षक निर्माण की प्रक्रिया का अभिन्न अंग मानते हैं। इंटर्नशिप के प्रति यह सकारात्मक दृष्टिकोण इस बात का संकेत है कि प्रशिक्षणार्थियों ने विद्यालयी अनुभवों से प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त किया। इंटर्नशिप के माध्यम से उन्हें वास्तविक कक्षा-कक्ष में शिक्षण करने, विद्यार्थियों के साथ संवाद स्थापित करने, पाठ योजना तैयार करने, मूल्यांकन कार्यों का संचालन करने तथा विद्यालयी प्रशासनिक प्रक्रियाओं को समझने का अवसर मिला। इन अनुभवों ने उन्हें यह अनुभव कराया कि केवल सैद्धांतिक अध्ययन से प्रभावी शिक्षक नहीं बना जा सकता, बल्कि वास्तविक विद्यालयी परिस्थितियों में कार्य करना भी उतना ही आवश्यक है। 90% उत्तरदाताओं द्वारा इंटर्नशिप को अत्यधिक आवश्यक माना जाना इस बात का प्रमाण है कि विद्यालय आधारित प्रशिक्षण ने उनके व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। छात्राध्यापकों ने अनुभव किया कि इंटर्नशिप ने उनके आत्मविश्वास, कक्षा प्रबंधन क्षमता, संप्रेषण कौशल, नेतृत्व गुण, निर्णय क्षमता तथा शिक्षण दक्षताओं को सुदृढ़ किया। यही कारण है कि वे भविष्य में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में इंटर्नशिप की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। यह निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा के उस सिद्धांत का समर्थन करता है जिसके अनुसार अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) प्रभावी शिक्षक निर्माण की आधारशिला है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों को विद्यालयी जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराता है। इसके माध्यम से वे विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं, शिक्षण-अधिगम की चुनौतियों, अनुशासन व्यवस्था, अभिभावकों के साथ संवाद तथा विद्यालयी उत्तरदायित्वों को निकटता से समझ पाते हैं। परिणामस्वरूप उनमें शिक्षक की भूमिका के प्रति अधिक परिपक्व एवं उत्तरदायी दृष्टिकोण विकसित होता है। यही कारण है कि सभी उत्तरदाताओं ने इसे शिक्षक प्रशिक्षण के लिए आवश्यक माना। इसके अतिरिक्त यह निष्कर्ष नीति-निर्माताओं एवं शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए भी महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है। यदि प्रशिक्षणार्थी स्वयं इंटर्नशिप को शिक्षक निर्माण की केंद्रीय प्रक्रिया मानते हैं, तो शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में इसकी अवधि, गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता को और अधिक सुदृढ़ किया जाना चाहिए। विद्यालयों एवं प्रशिक्षण संस्थानों के मध्य बेहतर समन्वय स्थापित कर इंटर्नशिप को अधिक व्यावहारिक, अनुभव-आधारित एवं परिणामोन्मुख बनाया जा सकता है।

प्रमुख निष्कर्ष

1. 73% छात्राध्यापकों का डीमें प्रवेश का उद्देश्य शिक्षक बनना था। .एड.एल.
2. इंटर्नशिप से पहले 66% छात्राध्यापकों ने अपनी शिक्षण तैयारी अच्छी या बहुत अच्छी मानी।
3. 96% छात्राध्यापकों ने पाठ योजना निर्माण में सुधार स्वीकार किया।
4. 95% छात्राध्यापकों ने कक्षा अनुशासन एवं प्रबंधन क्षमता में वृद्धि अनुभव की।
5. 100% छात्राध्यापक विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने में सफल रहे।
6. 97% छात्राध्यापकों ने मूल्यांकन क्षमता में सुधार बताया।
7. 97% छात्राध्यापकों के आत्मविश्वास में अधिक या बहुत अधिक वृद्धि हुई।
8. 53% छात्राध्यापकों के अनुसार सबसे अधिक सुधार कक्षा प्रबंधन में हुआ।
9. 99% छात्राध्यापकों ने माना कि इंटर्नशिप ने उन्हें रोजगार हेतु सक्षम बनाया।
10. 100% उत्तरदाताओं ने इंटर्नशिप को भविष्य के शिक्षक प्रशिक्षण हेतु आवश्यक माना।

परिकल्पना परीक्षण

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर स्पष्ट है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम के बाद छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन, पाठ योजना निर्माण, मूल्यांकन क्षमता, संप्रेषण कौशल तथा आत्मविश्वास में उल्लेखनीय सकारात्मक परिवर्तन पाया गया। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा मुख्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है कि डी विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक .एड.एल. प्रभाव डालता है।

अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट हुआ कि जिन प्रशिक्षणार्थियों ने विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम को अधिक उपयोगी एवं सार्थक माना, उनमें शिक्षण कौशल के विभिन्न आयामों का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। पाठ योजना निर्माण में 96 प्रतिशत, कक्षा प्रबंधन में 95 प्रतिशत तथा आत्मविश्वास में 97 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों ने सकारात्मक अनुभव व्यक्त किए। इससे संकेत मिलता है कि विद्यालय इंटर्नशिप के अनुभव एवं शिक्षण कौशल विकास के मध्य सकारात्मक अंतर्संबंध विद्यमान है।

इसी प्रकार मूल्यांकन क्षमता, संप्रेषण कौशल, नेतृत्व क्षमता एवं निर्णय क्षमता में भी उच्च स्तर की सकारात्मक प्रवृत्तियाँ प्राप्त हुईं। इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों को वास्तविक विद्यालयी परिस्थितियों से जोड़कर उनके शिक्षण कौशलों के विकास में सहायक सिद्ध होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम डी.एल.एड. प्रशिक्षण की प्रभावशीलता बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन में प्राप्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि इंटर्नशिप ने छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन क्षमता, मूल्यांकन दक्षता, संप्रेषण कौशल, नेतृत्व गुण, आत्मविश्वास तथा व्यावसायिक दृष्टिकोण के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। अतः शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में विद्यालय इंटर्नशिप को केवल औपचारिक आवश्यकता न मानकर शिक्षक निर्माण की केंद्रीय एवं अनुभवात्मक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि इंटर्नशिप से पूर्व छात्राध्यापकों को पर्याप्त पूर्वाभिमुखीकरण (Orientation) प्रदान करना आवश्यक है। प्रशिक्षण संस्थानों को पाठ योजना निर्माण, शिक्षण-अधिगम सामग्री के उपयोग, ICT आधारित शिक्षण, मूल्यांकन तकनीकों, कक्षा प्रबंधन तथा विद्यार्थियों के साथ प्रभावी संवाद स्थापित करने जैसे विषयों पर विशेष प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए। इससे प्रशिक्षणार्थी विद्यालय में प्रवेश करने से पूर्व ही आवश्यक व्यावसायिक दक्षताओं से परिचित हो सकेंगे तथा इंटर्नशिप अवधि का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकेंगे।

ICT एवं डिजिटल शिक्षण से संबंधित प्राप्त निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि शिक्षक शिक्षा संस्थानों में तकनीकी प्रशिक्षण को और अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में डिजिटल संसाधनों, ई-कंटेंट निर्माण, स्मार्ट कक्षा एवं ऑनलाइन शिक्षण का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। इसलिए डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में ICT आधारित व्यवहारिक प्रशिक्षण, डिजिटल कंटेंट निर्माण कार्यशालाएँ तथा तकनीक-सम्मिलित शिक्षण अभ्यास को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए, ताकि भावी शिक्षक तकनीकी रूप से सक्षम बन सकें।

अध्ययन में मूल्यांकन कौशल एवं फीडबैक प्रदान करने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि पाई गई। इसके आधार पर यह सुझाव दिया जा सकता है कि शिक्षक शिक्षा संस्थानों में मूल्यांकन संबंधी व्यवहारिक प्रशिक्षण को और अधिक व्यापक बनाया जाए। प्रशिक्षणार्थियों को प्रश्नपत्र निर्माण, रूब्रिक निर्माण, सतत एवं समग्र मूल्यांकन (CCE), फॉर्मेटिव असेसमेंट तथा प्रतिपुष्टि प्रदान करने की तकनीकों का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जाना चाहिए। इससे वे भविष्य में विद्यार्थियों के अधिगम को अधिक प्रभावी ढंग से मापने एवं सुधारने में सक्षम होंगे।

विद्यालय इंटर्नशिप की सफलता में मार्गदर्शक शिक्षकों (Mentor Teachers) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अतः विद्यालयों में ऐसे अनुभवी एवं प्रशिक्षित मार्गदर्शक शिक्षकों की नियुक्ति की जानी चाहिए जो छात्राध्यापकों को नियमित मार्गदर्शन, रचनात्मक प्रतिपुष्टि तथा व्यावसायिक सहयोग प्रदान कर सकें। मार्गदर्शक शिक्षक और शिक्षक शिक्षा संस्थान के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित कर इंटर्नशिप प्रक्रिया को अधिक परिणामोन्मुख बनाया जा सकता है।

अध्ययन के परिणाम यह भी संकेत करते हैं कि इंटर्नशिप के माध्यम से छात्राध्यापकों के आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं व्यावसायिक नैतिक मूल्यों का विकास होता है। इसलिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में केवल शैक्षणिक दक्षताओं पर ही नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास, नैतिक शिक्षा, व्यावसायिक आचरण, नेतृत्व विकास एवं जीवन कौशलों पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। इससे प्रशिक्षणार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित होगा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि विद्यालय इंटर्नशिप कार्यक्रम शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने का एक प्रभावी माध्यम है। यदि इसे सुव्यवस्थित योजना, पर्याप्त अवधि, नियमित पर्यवेक्षण, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता तथा प्रभावी मार्गदर्शन के साथ संचालित किया जाए, तो यह भावी शिक्षकों को अधिक सक्षम, आत्मविश्वासी, तकनीकी रूप से दक्ष एवं व्यावसायिक रूप से उत्तरदायी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में विद्यालय इंटर्नशिप को और अधिक सुदृढ़ एवं अनुभव-आधारित स्वरूप प्रदान किया जाना चाहिए।

सुझाव

1. डीइंटर्नशिप की अवधि को पर्याप्त एवं व्यवस्थित बनाया जाए। .एड.एल.
2. इंटर्नशिप से पूर्व छात्राध्यापकों को माइक्रोटीचिंग एवं पाठ योजना निर्माण का अभ्यास कराया जाए।-
3. ICT एवं डिजिटल कंटेंट निर्माण पर विशेष प्रशिक्षण दिया जाए।
4. मार्गदर्शक शिक्षकों को छात्राध्यापकों के सतत मार्गदर्शन हेतु उन्मुख किया जाए।
5. इंटर्नशिप के दौरान नियमित पर्यवेक्षण एवं फीडबैक की व्यवस्था हो।
6. मूल्यांकन कौशल, प्रश्नपत्र निर्माण एवं फॉर्मेटिव असेसमेंट पर व्यावहारिक कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।
7. छात्राध्यापकों के अनुभवों को रिपोर्ट, सेमिनार और प्रेजेंटेशन के माध्यम से साझा कराया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अग्रवाल, जे) .सी .2014). *विकासशील समाज में शिक्षक एवं शिक्षा*। नई दिल्लीविकास पब्लिशिंग हाउस। :
- मंगल, एस) .के .2018). *शैक्षिक मनोविज्ञान के मूल तत्व*। नई दिल्लीपीएचआई लर्निंग। :
- शर्मा, आर) .ए .2016). *शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षणप्रशिक्षण*-। मेरठलाल बुक डिपो। .आर :
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद)NCTE). (2014). *शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों हेतु मानदंड एवं मानक*। नई दिल्ली राष्ट्रीय अध्यापक : शिक्षा परिषद।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद)NCERT). (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा)National Curriculum Framework)*। नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
- सिंह, एल) .सी .2017). *शिक्षक शिक्षासिद्धांत ; अवधारणाएँ एवं व्यवहार*। नई दिल्लीपब्लिशिंग। .एच.पी.ए :
- पाण्डेय, के) .पी .2019). *शिक्षक शिक्षा के सिद्धांत एवं व्यवहार*। आगराविनोद पुस्तक मंदिर। :
- भटनागर, आर) .पी .2018). *आधुनिक शिक्षक शिक्षा*। मेरठइंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस। :
- पाठक, पी) .डी .2017). *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी*। आगराअग्रवाल पब्लिकेशन्स। :
- भारत सरकार) .2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। नई दिल्लीशिक्षा मंत्रालय। :